ऐरावत क्षेत्र से निर्वाण को प्राप्त होने वाले भावी केवली
श्री १००८ पद्मप्रभ जिनेन्द्र पूजन

रचियता : श्रमण श्री विचिन्त्य सागर मुनि

॥ स्थापना ॥

मैंने मन मंदिर में सुंदर इक वेदी भव्य बनाई है।
श्रद्धा के स्वर्णिम रंगों से वह वेदी खूब सजाई है।
अब प्रतिष्ठेय इस वेदी पर हे पद्मप्रभ ! केवलि आओ
चिर काल हेतु इस वेदी पर हे नाथ ! प्रतिष्ठित हो जाओ।

ॐ ह्रीं भावी केवली श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट।
ॐ ह्रीं भावी केवली श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं
ॐ ह्रीं भावी केवली श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

|| जल ||

निज शास्वत चेतन प्राण अहा, उसकी श्रद्धा बिन भ्रमण किया।
चारों ही गतियों में अब तक बस जन्म लिया और मरण किया।।
हे अविनाशी आतम वासी हमको भी पद अविनाश वरो।
ये प्रासुक शीतल, निर्मल जल अर्पित है भवदुख नाश करो ।।

ॐ ह्रीं भावी केवली श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

|| चंदन ||

पर में उपयोग लगाते ही वर्धित भवताप सताता है
पर में ही राग द्वेष करके यह जीव महा दुख पाता है।
निज उपयोगी बनकर तुमने भव भव का ताप मिटा डाला
चंदन से अर्चा करता हूँ, मिट जायें भव भव की ज्वाला।

ॐ ह्रीं भावी केवली श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ अक्षत ॥

पग पग पर पद की इच्छायें अंतस को नित्य जलाती हैं
नाना सुंदर सुंदर रूपों में आकर मुझे लुभाती हैं।
अक्षय अविनाशी निज ध्रुव पद जो भगवन् तुमने पाया है।
उस निज ध्रुव की उपलब्धि में अक्षत अबलम्ब बनाया है।

ॐ ह्रीं भावी केवली श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ पुष्प ॥

कमनीय कामनी का दामन हर भव में हमको इष्ट लगा।
निज ब्रह्म की चर्चा चर्या व अनुमोदन हमें अनिष्ट लगा।
वह परम ब्रह्म का वेदन था जो काम भी तुमसे हार गया।
अब्रह्म विजेता बनने को, अर्पित ये पुष्पाहार नया।

ॐ ह्रीं भावी केवली श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय काम बाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ नैवेध ॥

बल है अनंत लेकिन निर्बल होकर भव भव दुख पाया है
इस क्षुधा वेदनी ने हमको पुद्गल का दास बनाया है।
चेतन रस का कर पान प्रभु तुमने ये क्षुधा मिटा डाली।
मैं भी क्षुधान्त कर सकूँ, अतः लाया ये व्यञ्जन की थाली।

ॐ ह्रीं भावी केवली श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ दीप ॥

चैतन्य दीप से आलौकित आतम प्रदेश की हर क्यारी।
पर मोहनीय विधि के कारण फैली पर्याय में अंधियारी।
हे देव ! आपने आतम में कैवल्य सूर्य प्रगटाया है।
मैं भी निर्मोह बनूँ भगवन् ! ये जगमग दीप जलाया है।

ॐ ह्रीं भावी केवली श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ धूप ॥

शुभ अशुभ भाव की परिणतियाँ भव की संतति बड़ाती हैं।
जिसके कारण आतम चारों ही गतियों में दुख पाती है।
शुभ अशुभ भाव को नश प्रभुजी!, पंचम गति में जा वास किया।
मैने भी धूप चढा तुमसा बनने का नाथ ! प्रयास किया।

ॐ ह्रीं भावी केवली श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ फल ॥

कर्मोदय के सुख दुख फल में मैं सुखी दुखी होता आया
जो स्वानुभूति रस से पूरित, शुद्धातम फल न चख पाया
शुद्धात्म भूति का उत्तम फल हे नाथ! आपने पाया हैं।
उस शुद्धातम फल को पाने मेरा भी मन ललचाया है।

ॐ ह्रीं भावी केवली श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ अर्घ्य ॥

मेरी अनर्घ्यता की सत्ता शाश्वत है अहा त्रिकाली है।
क्या पर्यायों का अर्घ्य करूँ जो क्षणभंगुर है जाली है।
हे पद्मप्रभ देवाधिदेव चरणों में अर्घ्य करूँ अर्पण।
जो पद अनर्घ्य पाया तुमने वो ही हमको दे दो भगवन्।

ॐ ह्रीं भावी केवली श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ जयमाला ॥

जय जय पद्मप्रभ देव नमन, जय जय देवाधिदेव नमन।
सुर नर खग करते सेव नमन, नहिं तुमसा कोई देव नमन॥
पूरव की पर्यायों में तुम, सूरि विमर्शसागर बनकर।
शुभ भरत क्षेत्र के आर्यखण्ड में, जन्में हो भारत भूँ पर॥
हो गई धन्य ये आज धरा, तेरी पद रज को पाकर के।

अम्बर सौभाग्य मनाता है, चरणों में शीष झुका करके॥
इस पंचम युग में भी तुमने चर्या ऐसी श्रृंगारी है।
तीनों लोकों की दिव्य शक्तियाँ चरणों पे बलिहारी हैं॥
अगली पर्याय में ब्रह्म स्वर्ग पाकर तुमको हर्षायेगा।
संसार वास का एक मात्र भव ही वाँकी रह जायेगा॥
धारण करके फिर जगत वास का चरम शरीरी अंतिम तन।
ऐरावत में नृप ब्रह्मदेव के घर जन्मोगे तुम भगवन॥
तब एक माह पहले से ही शुभ चिन्ह प्रगट हो जायेंगे।
जो भावी चक्री के वैभव को गा-गाकर बतलायेंगे॥
नौ निधियाँ चौदह रत्न अहा स्वयमेव प्रगट हो जायेंगे।
तब पद्‌म चक्रवर्ती उनको किंचित भी न अपनायेंगे॥
कीचड़ में खिला कमल जैसे, घर में ही वैरागी होंगे।
तब ही तो घर में तीर्थंकर सुत बनकर अवतारी होंगे॥

क्षण भंगुर जान सभी वैभव छैः खण्डों का परित्याग करें।
बन आप महायोगी भगवन निज आतम से अनुराग करें॥
होगा आतम पुरुषार्थ प्रबल चउ कर्म घाति नश जायेंगे।
पद्मप्रभ केवलज्ञानी का यश तीनों लोक सुनायेंगे॥
फिर दिव्य देशना को पाकर तिहुँ लोक अहा हर्षायेंगे।
कोई श्रमण धर्म अपनायेगा कोई श्रावक बन जायेंगे॥
फिर योग निरोध क्रिया करके प्रभु आतम ध्यान लगायेंगे।
तब शेष अघाति कर्म नशा, प्रभु दशा अशेषी पायेंगे॥
सिद्धालय सा सुख पाने को, श्रद्धालय में आमंत्रण है।
गुणमाला की जयमाला गा-गाकर गुरु चरणों वंदन है॥

ॐ ह्रीं भावी केवली श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय जयमालायें पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रद्धालय में आ बसो, हे भावी अरिहंत।
अंत आत्मा का मिले, जो है सदा विचिन्त्य॥

(परि पुष्पांजलि क्षिपामि)